# बढ़ रहा कैलीग्राफी का क्रेज ऑनलाइन बन रही पहचान

अजय चौहान

गाजियाबाद। यूं तो कैलीग्राफी वर्षों पुरानी कला है लेकिन सोशल मीडिया के दौर में युवाओं ने इसे नए कलेवर के साथ प्रस्तुत किया है। इंटरनेट ने युवाओं को अपनी कला दिखाने के लिए मंच और बाजार दोनों दिया है। लोगों में खास मौकों पर गिफ्ट देने के लिए मनपसंद हैंडमेड कार्ड देने का चलन बढ़ा है। वहीं कुछ लोग आकर्षक शैली में लिखे अपने पसंदीदा कोट्स को घर या ऑफिस में फ्रेम करना चाहते हैं। शहर में भी कुछ ऐसी ही युवा हैं जो कैलीग्राफी में अपनी पहचान बना रही हैं। उनसे रूबरू होते हैं।

राजनगर एक्सटेंशन में रहने वाली श्रेया बीटेक की स्टूडेंट हैं। वह पिछले दो साल से कैलीग्राफी कर रही हैं। वह ग्राफिक डिजाइन से जुड़ी थीं। उन्होंने सोशल मीडिया पर इस तरह के हाथों से बने आकर्षक पोस्टर देखे, जो उन्हें बेहद पसंद आए। इसके बाद उन्होंने कैलीग्राफी के बारे में रिसर्च करना शुरू किया। प्रैक्टिस करते-करते उनकी लेखनी में निखार आता गया। अभी वह काफी अच्छे से कर लेती हैं। पिछले एक साल से लोगों के भी ऑर्डर ले रही हैं। उन्होंने बताया की यह उनके लिए एक सुकून देने वाला काम है। वह इससे होने वाली कमाई का एक बड़ा हिस्सा जरूरतमंद बच्चों के लिए काम कर रहे एक एनजीओ को देती हैं।

दिल्ली यूनिवर्सिटी से इकोनॉमिक्स की पढ़ाई कर रहीं प्रज्ञा काफी समय से कैलीग्राफी से जुड़ी हैं। अपने इस हुनर से उन्होंने सोशल मीडिया पर एक खास पहचान बनाई है। उनके फॉलोअर्स की तादाद हजारों में है। वह ऑनलाइन डिमांड पर भी पोस्टर बनाती हैं। उन्होंने बताया कि पिछले कुछ समय से लोगों में कैलीग्राफी को लेकर क्रेज बढ़ा है। लोग उन्हें अलग-अलग तरह के पोस्टर ऑर्डर करते हैं। उसी के आधार पर पैसे तय होते हैं। ऑनलाइन ही डिलीवरी करती हैं। साथ ही वह वर्कशॉप भी कराती हैं। उनका कहना है कि जब उनका किसी से बात करने का मन नहीं होता या वह अशांत महसूस करती हैं तो पोस्टर बनाने लगती हैं।

सूर्यनगर निवासी सौम्या मदान साइकोलॉजी से ग्रेजुएशन कर रही हैं। वह पिछले चार साल से कैलीग्राफी से जुड़ी हैं। वह बताती हैं कि बचपन से उन्हें ड्राइंग बेहद पसंद थी मगर पोस्टर मेकिंग नहीं आती थी। उन्होंने इसकी वर्कशॉप ली। यूट्यूब की मदद से सीखा। अब अच्छे से कर लेती हैं। वह शौक के तौर पर यह करती हैं। हालांकि लोग इंस्टाग्राम पर उनके पोस्टर देखकर ऑर्डर करते हैं लेकिन वह अपने शौक के लिए ही जब टाइम मिलता है तब बनाती हैं। इससे उनके फॉलोअर्स जरूर बढ़ रहे हैं।